गंगा नदी में 2 लाख कार्प अंगुलिकाओं के रैन्चिंग के माध्यम से भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ द्वारा नमामि गंगे कार्यक्रम में सहयोग

संस्थान में 20 दिसम्बर, 2017 को देशज कार्प मछलियों के संरक्षण कार्यक्रम में आयोजित कार्यशाला में उत्तर प्रदेश सरकार के पशुपालन, लघु सिंचाई एवं मात्स्यिकी के **माननीय मंत्री प्रो. एस.पी. सिंह बघेल जी** द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में जनसभा को सम्बोधित किया गया। **श्री पवन कुमार,** आई. ए.एस., **सचिव**, उ.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड, लखनऊ एवं उत्तर प्रदेश के मत्स्य विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. एस.के. सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में एवं भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक **डॉ. ए.डी. पाठक** अतिथि के रूप उपस्थिति थे। इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि द्वारा संस्थान की पत्रिका '**मत्स्य लोक**' का विमोचन किया गया।

इस कार्यक्रम के दौरान माननीय मंत्री जी ने पवित्र गंगा नदी में कार्प मछलियों की अंगुलिकाओं की रैन्चिंग (पालन) के माध्यम से देशज कार्प मछलियों के आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण कार्यक्रम को झण्डा दिखाकर सांकेतिक शुभारम्भ किया।

प्राकृतिक नदियों का अस्तित्व टिकाऊ जैव विवधिता एवं उनकी स्वच्छता से सीधे जुड़ा हुआ है। पर्यावरण तंत्र में साम्य बनाये रखने के लिये मछली एक महत्वपूर्ण अवयव है। संस्थान का यह कार्यक्रम भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार के नमामि गंगे कार्यक्रम को सफल बनाने की दिशा में एक कदम है।

इण्डो–गंगेटिक प्लेन, भारतीय मेजर कार्प्स (कतला रोहू, मृगल) तथा कुछ माइनर कार्प्स का मूल आवास है तथा राष्ट्रीय जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रम का लक्ष्य इन प्रजातियों को उनके मूल रेंज में संरक्षित करना है। भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा गंगा नदी में पॉच प्रकार की कार्प प्रजातियों की दो लाख उन्नत अंगुलिकाओं को छोड़कर उनके प्रसार की योजना कार्यान्वित की जा रही है। प्राकृतिक आनुवंशिक विविधता संरक्षण के उददेश्य को पूर्ण करते हुये इन उन्नत अंगुलिकाओं का उत्पादन भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के वैज्ञानिकों द्वारा चयनित ब्रूड स्टॉक के माध्यम से किया गया है, जिससे इन प्रजातियों को आनुवंशिक मिलावट से बचाकर भविष्य में इनका अस्तित्व सुनिश्चित किया जा सके।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा गंगा नदी में पॉच प्रकार की कार्प प्रजातियों की दो लाख उन्नत अंगुलिकाओं को छोड़ा गया। गंगा नदी में कानपुर के निकट धार्मिक धरोहर के रूप में संरक्षित स्थान बिठूर में मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय किया गया। भा.कृ.अनु.प.–अटारी के निदेशक **डॉ. यू. गौतम** एवं भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक **डॉ. ए.डी. पाठक** तथा भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के वैज्ञानिकों एवं कार्मिकों के द्वारा अंगुलिकाओं को छोड़ा (रिलीज) गया।

ऐसे प्रयासों द्वारा महत्वपूर्ण कार्प प्रजातियों के प्राकृतिक जनसंख्या को बढ़ाया जा सकेगा जिससे अनेक मानव जनित कारणों से इनकी संख्या में आ रही गिरावट को रोककर इन्हें संरक्षित किया जा सके।